दिनांक–08.02.2025

B.A. PART- III HONS (Philosophy)

# भारतीय दर्शन में मोक्ष

सांसारिक व्यामोह से मुक्त होना ही मोक्ष है। मोक्ष का शाब्दिक अर्थ है–छुटकारा। प्रश्न उठता है कि किससे छुटकारा– (a) कुछ विद्वानों के अनुसार तीनों प्रकार के दु:खों भौतिक, अधिदैविक और आध्यात्मिक से छुटकारा। (b) कतिपय अन्य विचारकों के अनुसार मोक्ष का अर्थ इस संसार के चक्कर से छुटकारा अर्थात् अखण्ड आनन्द की प्राप्ति है। (c) कुछ विचारकों ने मोक्ष का अर्थ अज्ञान से छुटकारा पाना लगाया है। (d) तथापि समस्त विचारक इस बात पर एकमत हैं कि मोक्ष ऐसी व्यवस्था का नाम है, जहाँ पर दु:ख नहीं है तथा आनन्द ही आनन्द है। (e) श्रुति में कहा गया है कि मोक्ष समस्त प्रकार की इच्छाओं से छुटकारा पाना माना गया है। मोक्ष न आकाश में है, न पाताल में और न पृथ्वी पर– अतः मोक्ष के स्वरूप के सम्बन्ध में विचारकों में मत-भिन्नता है।

**न्याय वैशेषिक** : मोक्ष दु:खाभाव की अवस्था है। इस अवस्था में आत्मा सारे अनुभवों से मुक्त हो जाती है। यह अवस्था अनुभवहीन अवस्था है। यह चेतना शून्य अवस्था है। न्याय वैशेषिकों का विदेह-मुक्ति में विश्वास है।

**सांख्य दर्शन** : यह दर्शन भी दु:ख निवृत्ति की अवस्था को मोक्ष मानता है। इस अवस्था में सुखानुभूति का नितांत अभाव रहता है। जीवन-मुक्ति में इस दर्शन का विश्वास है।

**जैन दर्शन** : यह दर्शन जीव को चेतन-द्रव्य मानता है। इस दर्शन के अनुसार जब मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है, तो उसे अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य तथा अनन्त आनन्द की प्राप्ति होती है। यह दर्शन मोक्ष की प्राप्ति के लिए सम्यक ज्ञान, सम्यक श्रद्धा एवं सम्यक आचरण को आवश्यक मानता है। इस दर्शन का विश्वास जीवन-मुक्ति में है।

**बौद्ध दर्शन** : दु:ख निरोध की अवस्था मोक्ष या निर्वाण है। मोक्षावस्था में राग-द्वेष तथा दु:ख बिल्कुल नष्ट हो जाते हैं। राग-द्वेष एवं दु:ख-रिक्त जीवन में ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष प्राप्योपरान्त पुनर्जन्म के दु:ख की सम्भावना नहीं रहती है।

**अद्वैत वेदान्त दर्शन** : यह दर्शन आत्मा को सत्, चित एवं आनन्द मानता है। अज्ञानता एवं माया-मोह में आबद्ध होने के कारण मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान नहीं रहता है। जब मनुष्य ज्ञान प्राप्त कर लेता है, तब उसे आत्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि ज्ञान ही मोक्ष है। आत्मा स्वत: मुक्त है, पारमार्थिक दृष्टि से मुक्ति की प्राप्ति होती है, सत्य की स्पष्ट अनुभूति मुक्ति है। वेदान्त दर्शन आनन्द की अवस्था को मोक्षावस्था मानता है। यह दर्शन जीवन-मुक्ति में आस्था रखता है।

**मीमांसा** : मीमांसा के अनुसार मोक्ष ही सर्वोच्च कल्याण है। मोक्ष पुनर्जन्म एवं भव-बन्धन से मुक्ति दिलाता है। मीमांसा दर्शन यह कहता है कि चैतन्य आत्मा का कोई स्वाभाविक गुण नहीं है। मुक्तात्मा का सम्बन्ध शरीर, इन्द्रियों एवं मन से टूट जाता है। परिणामस्वरूप चैतन्य धर्म का उसमें अभाव हो जाता है। इस प्रकार आनन्द की अवस्था को मोक्ष की अवस्था नहीं माना जा सकता है। इस अवस्था में आत्मा सुख-दु:ख से पृथक हो जाती है। वह अपने वास्तविक स्वरूप में रहती है।

**डॉ. श्रवण कुमार मोदी**
**सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग**
**शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय**
**बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण**
**मो0–9608685335**
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com